



प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- ♦ सेवा एवं समर्थन प्रदान करने के लिए किसानों द्वारा कृषि उद्यमी का सम्मान
- ♦ इस माह के कृषि उद्यमी: श्री शरद देशपांडे, हुब्ली, कर्नाटक
- ♦ इस माह का संस्थान: भारत यूरोपीय वाणिज्य एवं व्यापार प्रकोष्ठ (आई ई सी सी आई), भोपाल, मध्य प्रदेश
- ♦ पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम
- ♦ अमरावती के कृषि उद्यमी "शेटीनिष्ठा शेठकारी पुरस्कार" से सम्मानित

कृषि उद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800-425-1556

"कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतियोगिता मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।"

ई-बुलेटिन

कृषि उद्यमी



प्रतियोगिता अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड - VIII अंक -IX

जुलाई, 2016

सेवा एवं समर्थन प्रदान करने के लिए किसानों द्वारा कृषि उद्यमी का सम्मान

शहरी क्षेत्रों में कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाने रुचि कम होने के कारण हम किसी किसान को सम्मानित करने की बात बहुत कम सुनते हैं। परंतु श्री एम. नागराजू इस मानक से परे हैं। हैदराबाद, तेलंगाना के रहते हुए भी उन्होंने इस मेट्रोपॉलिटन नगर में किसान बनकर रहने को ही चना। कृषि उद्यमी के रूप में श्री नागराजू 14 सालों से किसानों को सेवा में लगे हुए हैं। वर्ष 2004 में ए सी ए बी सी प्रशिक्षण के प्रशिक्षार्थी, नागराजू, मूलभूत तकनीकियों के विकास तथा नवोन्मेषन में नित लगे रहते हैं। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए उन्होंने स्मार्ट फार्मिंग की अवधारणा को अपनाया। उनकी अवधारणा के द्वारा कई किसान विदेशी फसल, हाईटेक फार्म मशीनरी का उपयोग, मल्टिंग और सूक्ष्म सिंचाई, मौसमी फलों व सब्जियों को परिक्षण बीज प्रसंस्करण, फसल उत्पादन के साथ पुष्प कृषि इत्यादि जैसी मध्यस्थताओं के साथ लाभान्वित हुए हैं। विदेशी फल एवं सब्जियों के बीजों के आयात से उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। तैयवान से उच्च मूल्य वाले पपीता के बीज जैसे एफ1 हाईब्रिड ड्वार्फ पपीता, आईस वाक्स तरबूज, खरबूज, कुछ विदेशी फल एवं सब्जियों के बीज उनके द्वारा मंगाए जाने वाले बीजों में से कुछ प्रकार हैं। श्री नागराजू ने 1100 से अधिक प्रगतिशील छोटे एवं मझोले किसानों को हाईटेक पपीता कृषि में प्रशिक्षण दिया और उन्हें सफलता पूर्वक मार्केट से जोड़ा। इसके अलावा उन्होंने तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश एवं कर्नाटक के 15000 से अधिक किसानों को कृषि-सलाहकारी सेवा प्रदान की है। उनकी सेवा एवं योगदान के प्रति आभार प्रकट करते हुए रंगारेड्डी जिले के किसानों ने 29 जुलाई, 2016 को तेलंगाना को-ऑपरेटिव एपेक्स बैंक सेंट्रल ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट, राजेन्द्रनगर में आयोजित एकदिवसीय प्रदर्शनी सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम में उनको सम्मानित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती वी. उषा रानी, भा.प्र.से., महानिदेशक मैनेज, हैदराबाद ने किया। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य अतिथियों में श्री अनन्तराव, निदेशक, टी एस सी ए बी सी टी आई, डॉ. वी. सुब्बारायडु, परियोजना निदेशक, आत्मा, रंगारेड्डी, अतिरिक्त निदेशक, कृषि अधिकारी, ब्लॉक तकनीकी मैनेजर (बी टी एम), सहायक तकनीकी प्रबंधक (एटीएम) और रंगारेड्डी जिले के 250 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया है। प्रशिक्षण में समाहित विषय ये मृदा और जल प्रबंधन, जैवी खेती, मूल्य जोड़, बाजार सूचना इत्यादि। प्रदर्शनी में नवीन तकनीकियों जैसे मल्टिंग फिलम, फल एवं सब्जियों के मक्खियों का ट्रैप, टाटा जी आई प्रशिक्षित ढाँचे, हाईड्रोजल, जैविक उत्पादन तथा विदेशी फल एवं सब्जी का प्रदर्शनी किया गया है। श्री नागराजू को मोबाई: +91 9391144445. पर संपर्क किया जा सकता है।



श्री एम्. नागराजू कृषि उद्यमी को रंगारेड्डी जिले के किसानों ने सम्मानित किया



राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान,



कृषि सहयोग और कृषि किसान कल्याण मंत्रालय



राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

सफलता के बीज:

किसानों को समय पर सहायता प्राप्त नहीं होती है। वर्तमान विस्तार तंत्र किसानों तक पहुँचने में या तो अपर्याप्त है या अनुकूल नहीं है। कृषि-निवेश उद्योग के क्षेत्र में 30 वर्षों के अनुभव के साथ श्री शरद देशपांडे (56) हुबबली, कर्नाटक से है और वे इस कमी को दूर करने के लिए कुछ करना चाहते हैं। एक योग्य सेड टेक्नोलॉजिस्ट होने के नाते श्री शरद देशपांडे बीज के विषय में बहुत उत्साह दिखते हैं। उनका विश्वास है कि केवल बीज ही देश की बढ़ती आबादी की खाद्य सुरक्षा का आश्वासन दे पता है। वे कई उदाहरणों से समझते हैं कि मक्काई, टमाटर, खरबूज इत्यादि फसलों का पैदावार हाइब्रिड बीजों के ज्ञान चार गुना बढ़ा है जबकि अन्य इनपुट में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। उनके अनुसार यह सुधारे गए अनुवंशुकी की शक्ति है। हमारे देश की आबादी 35 करोड़ से (1947) अब 125 करोड़ (357 प्रतिशत बढ़ा है) हो गया है। इसी समय कृषि उपयोगी भूमि विभिन्न कारणों से संकुचित होते जा रहा है। फसल उत्पादन पर उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग एवं अनिश्चित बारिश के दुष्प्रभाव के कारण मृदा की उर्वरता खत्म होते जा रही है और कृषि एवं कर्षण असुरक्षित होते जा रहे हैं। इन परिस्थितियों का सामना करने के लिए उच्च पैदावार देने योग्य बीज जिसमें विषम परिस्थितियों के सामान्य करने की अंतरशक्ति होना जरूरी है कि आवश्यकता है जो अपने प्रधानमंत्री जी का सपना “मोर क्रॉप पर ड्रॉप” को पूरा करने में मददगार हो सके। श्री शरद पैदावार को बढ़ाने तथा किसानों की आय में वृद्धि लाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग पर जोर देते हैं। उनके अनुसार उच्च गुणवत्ता के बीज एवं उन्नत कृषि विज्ञान उत्पादन के आधार है। उन्होंने अपने बिजिनेस मॉडल के रूप में तीन कॉटिदार रणनीतियों का उपयोग किया। उच्चकोटि के बीजों की आपूर्ति (वाणिज्य एवं संविवरण द्वारा) (2) पैदावार दाता, रोग, कीट एवं सूखे के लिए सहनशीलता (नमूना परीक्षण केन्द्र धारवार) के आकलन के लिए सभी प्रकारों एवं नमूनों का परीक्षण (3) कृषि में नवीन विषयों के लिए कंपनियों के कर्मचारियों एवं किसानों का प्रशिक्षण (कॉर्पोरेट संस्थाओं के लिए फसल विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन ग्रामीण स्तर पर करना)



श्री शरद देशपांडे प्रशिक्षणार्थी के साथ

धारवाड़ जिला नरेन्द्र गाँव के श्री बसपपा फसल का दौरा किया और उन्हें हाई-टेक सब्जी उत्पादन के लिए पैकेज ऑफ प्राकटिस में प्रशिक्षण दिया गया है। उनके पत्तागोबी का फसल अब पहले से तीन गुना अधिक पैदावार देता है। उनका कहना है कि बीज बोने से पहले उसका परीक्षण कर लेना चाहिए।



विदेशी प्रशिक्षणार्थी ग्रुप डिस्कशन में सहभागी

नौकरी के लिए इस्तीफा देने के बाद श्री शरद कमाई के लिए दूसरा जरिया खोजने लगे। इस दौरान श्री शरद ए सी व ए बी सी योजना के बारे में सुने और इस योजना में सम्मिलित होने का निर्णय लिया। तदनुसार वे श्रीराम प्रतिष्ठान मंडल (एसएमपी), बेलगावि मैनेज द्वारा अनुमोदित नोडल प्रशिक्षण संस्थान है जो इस योजना के तहत प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस प्रशिक्षण द्वारा उनके उद्यमिता कौशल में वृद्धि हुई। तुरंत बाद श्री शरद ने कृषि सलाहकारी सेवा कार्यालय “सिलिविया ट्रेड आई एस सी” के नाम पर पंजीकृत करायी। उनके क्रियाकलापों को समर्थन प्रदान करते हुए आन्ध्रा बैंक, विजयनगर, हुबबली ने ₹.20 लाख वित्तीय सहयोग दिया। उन्होंने 4 एकड़ भूमि में रोड नेट, पाली-हाउसेस, सिंचाई व्यवस्था को कई फसलों के मूल्यांकन एवं नमूनों के परीक्षण हेतु विकसित की। उनके फार्म पर फील्ड, सब्जी एवं फूलों के विभिन्न प्रकार का परीक्षण किया जाता है और निष्पादन को दर्शाया जाता है। सात नामी बीज कंपनियों में इन की सवाओं का लाभ उठाया है और नमूना परीक्षण सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। अब तक 1,000 से अधिक प्रशिक्षार्थी विभिन्न फसलों पर गहन प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं। श्री शरद उच्च एवं गुणवत्ता युक्त ब्रैंडों के बीज एवं कीटनाशकों के व्यापार से भी जुड़े हुए हैं। वे नियमित रूप से किसानों के पास जाते हैं और उन्हें सलाहकारी सेवा प्रदान करते हैं। वे विधे डेमॉन्स्ट्रेशन को भी विभिन्न फसलों एवं तकनीकों के लिए आयोजित करते हैं। 100 से अधिक गाँवों के 5,000 किसानों को उन्होंने अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। ₹.5 करोड़ की वार्षिक टर्नओवर के साथ “सिलिविया ट्रेड आई एस सी का लक्ष्य किसानों, छात्रों एवं कॉर्पोरेट्स के लिए संपूर्ण नमूना परीक्षण सुविधा तथा किसानों के लिए ऑनफार्म प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में व्यापक बनाना है। श्री शरद बीज व्यापार में निवेशकों के लिए तकनीकी सलाह और रणनीतिक सलाहकारी प्रदान करते हैं। नव उद्यमियों के लिए उनका संदेश है कि “सही एवं इमानदार इरादे से किसानों के साथ काम करिए, आप निश्चित रूप से सफल होंगे”

श्री शरद देशपांडे

८५ मयूरी एस्टेट, हुबबली, कर्नाटक, ५८००२३, ई-मेल : deshpande.sharad@gmail.com, मोबाइल : +91 94835 10365

श्रीमती अनुराधा सिधई
नोडल अधिकारी



नाम एनटीआई: भारत
यूरोपीय वाणिज्य एवं व्यापार
प्रकोष्ठ (आई ई सी सी आई)
पता: ए सी ए बी सी एवं
निदेशक

आई ई सी सी आई, एफ –
101, रक्षा टावर, चुन्नाभट्टी,
भोपाल, मध्य प्रदेश
– 462016,

फोन सं.: 755- 4270989

मो.नं. : 9826075378

ई-मेल: info@ieci.com

वेबसाइट: www.iecci.com

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों
की संख्या : 2

प्रशिक्षित उम्मीदवारों की

संख्या: 61

स्थापित वेंचर्स की संख्या: 09

कृषि उद्यम स्थापित: खरगोश

पालन, डेयरी, कृषि इनपुट

शॉप, कुक्कुट, बकरी पालन

आदि।

विकसित एवं समावेशी अर्थव्यवस्था के लिए दूरदृष्टि: आई.ई.सी.सी. आई मंत्र

भारत यूरोपीय वाणिज्य एवं व्यापार प्रकोष्ठ (आई ई सी सी आई) एक व्यापार समर्थित अनुसंधान, परामर्शी एवं आर्थिक विकास संगठन है जिसकी उपस्थिति अखिल भारतीय स्तर पर तथा जोर निम्न विकसित क्षेत्रों पर है। यह औपचारिक रूप से वर्ष 2002 में एक गैर-लाभकारी संस्था के रूप में पंजीकृत हुई थी, जिसका उद्देश्य यूरोपीय देशों के साथ अपने व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा देना तथा देश को निम्न विकसित क्षेत्रों का आर्थिक विकास करना था। भारत-यूरोपीय वाणिज्य एवं व्यापार प्रकोष्ठ (आई ई सी सी आई) को "एग्रि-क्लिनक्स और एग्रि-बिजिनेस केंद्रों" हेतु मैनेज, हैदराबाद द्वारा मध्य प्रदेश राज्य के लिए नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एन टी आई) के रूप में नियुक्त किया गया। आई ई सी सी आई एसी एवं एबीसी कार्यक्रम के लिए एक नया नोडल प्रशिक्षण संसंस्थान है तथा इन संबंध में 7 जनवरी, 2016 को मैनेज के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये थे। आई ई सी सी आई इस कार्यक्रम के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु तीन आयामी नीति पर कार्यरत है और इसके लिए इसके पास तीन कार्यक्षेत्र है।

- पहला कार्यक्षेत्र प्रत्याशी को जुटाना है, जहाँ लक्ष्य संभावित योग्य प्रत्याशियों में कार्यक्रम के प्रति पोत्साहन, प्रचार एवं जागरूकता पैदा करना है। यह कार्यक्षेत्र आवेदन आमंत्रित करता है और स्क्रीनिंग समिति की सहायता से उत्तम प्रत्याशियों के चयन में सहायक होता है।
- दूसरा कार्यक्षेत्र प्रशिक्षण समन्वय हेतु है।
- यह कार्यक्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रमों विशेषज्ञों क्षेत्र दौरों, बाजार सर्वेक्षणों आदि का समन्वय करता है। तृतीय कार्यक्षेत्र बैंकिंग परियोजना रिपोर्ट बनाना, बैंक औपचारिकताओं पर प्रत्याशियों से समन्वयन और प्रशिक्षित करना तथा ऋण मंजूरी के लिए सभी स्तरों पर बैंक से समन्वयन करना शामिल है। सभी तीनों दल संयुक्त रूप से इस कार्य की देखरेख भी करेंगे जिसमें पीछे से आगे की ओर लिंकेजेस क्रेडिट लिंकेजेस शिकायत निपटान और अन्य

मुद्दे शामिल है। आई ई सी सी आई ने एक बैच (2 मार्च, 2016 से 30 अप्रैल, 2016 तक) सफलता पूर्वक पूरा किया तथा दूसरा बैच 20 जून से 19 अगस्त, 2016) तक है।



कृषि उद्यमी प्रशिक्षणार्थी संस्थान में तथा फील्ड विजिट में सहभागी



“आधुनिक मुर्गीपालन प्रबंधन” पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम

एग्रि-क्लिनक्स एवं एग्रि-बिजनेस केन्द्रों (एसी व एबीसी) योजना के अंतर्गत “आधुनिक मुर्गीपालन प्रबंधन” पर एक पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम 12 से 16 जुलाई, 2016 के दौरान आई सी ए आर मुर्गीपालन अनुसंधान निदेशालय (आई सी ए आर - डी पी आर), हैदराबाद, तेलंगाना राज्य में आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश राज्यों से 26 कृषि उद्यमियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुर्गीपालन और आधुनिक मुर्गियों को प्रजनन, आहार तथा प्रबंधन, रोगों की रोकथाम और नियंत्रण, जैविक सुरक्षा और वाणिज्यिक मुर्गीपालन उत्पादन इसमें आवरित किये गये।



कृषि उद्यमी प्रशिक्षणार्थी डायरेक्टरेट ऑफ पोल्ट्री संस्थानके पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागी



कृषि उद्यमी प्रशिक्षणार्थी नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल डेवेलोपमनेट एवम पंचायती राज के पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागी

“स्थापित कृषि उद्यमियों हेतु ग्रामीण उद्यम” पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम

ग्रामीण उद्यमों में कृषि उद्यमशीलता कौशल को मजबूत बनाने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम 12 से 16 जुलाई, 2016 के दौरान रूरल टेक्नॉलोजी पार्क (आरटीपी), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान एवं पंचायत राज (एन आई आर डी एवं पी आर), हैदराबाद, तेलंगाना में आयोजित की गयी थी। कार्यक्रम की शीर्षक “ग्रामीण उद्यम” था। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र, मध्यम प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल से 29 कृषि उद्यमियों ने भाग लिया। पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बड़े विषय जैसे सौर ऊर्जा एवं उपकरण, मधुमक्खी पालन, शहद की प्रोसेसिंग, लीक प्लेट मेकिंग, हाथ से बना कागज, मशरूम की खेती और संरक्षण, हर्बल कॉस्मेटिक्स, मड ब्लॉक निर्माण तकनीक, मॉर्केटिंग हेतु आई सी टी, प्राकृतिक हाई प्रौद्योगिकी और कार्बनिक ऊर्वरक शामिल किए गए। रूरल टेक्नॉलोजी पार्क में स्थापित उद्यमियों जो उल्लेखित गतिविधियों का व्यवहार करते हैं, वे वैयक्तिक प्रस्तुतिकरण दिया और कृषि उद्यमियों को अपने विशिष्ट व्यापार के बारे में भी समझाया।

अमरावती के कृषिउद्यमी “शेटीनिष्ठा शेटकारी पुरस्कार” से सम्मानित

“शेटीनिष्ठा शेटकारी पुरस्कार” श्री वसंत राव नाईक, भूतपूर्व मुख्यमंत्री की जयंती के अवसर पर महाराष्ट्र राज्य में दिया जाता है। इस वर्ष महाराष्ट्र के अमरावती जिले के कृषि उद्यमी श्री युवराज राठौड़ ने कृषि विज्ञान केन्द्र, दुर्गापुर से एसी व एबीसी के अंतर्गत प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद उन्होंने कार्बनिक खेती पर अपना कृषि-परामर्श व्यापार शुरू किया। अमरावती जिला वर्षा आधारित क्षेत्र है जहाँ की मुख्य फसलों कपास, सोयाबीन और मसूर दाल है। श्री राठौड़ हर वर्ष निरंतर गिरते जा रहे फसलों के उत्पादन से परेशान थे। वे समझ चुके थे कि इनका प्राथमिक कारण खेती के लिए किसानों द्वारा अपनायी जाने वाली पद्धतियाँ और वर्षा पर निर्भर क्षेत्र होने के चलते अनियमित मौसमीय परिस्थितियाँ भी फसल उत्पादनों पर कहर बन कर टूट पड़ रही हैं। शायद यही कारण था कि कपास और मसूर दाल उत्पादकों को अपने निवेशों के बदले उतना लाभ नहीं मिल पा रहा था। इन समस्याओं का संज्ञान लेते हुए श्री राठौड़ ने कपास और मसूर दाल के लिए संतुलित पोषक तत्वों और जल प्रबंधन पर पदार्शन आयोजित किया। उन्होंने विभिन्न खेतों में कपास और मसूर दाल बोया और विवेकपूर्ण तरीके से उन्होंने खाद और पानी दिया। उन्होंने दोनों फसलों में ऊर्वरक और पानी देने के लिए निषेचन पद्धति का उपयोग किया। समयबद्ध ढंग से ऊर्वरक और पानी दोनों की इस अनोखी पद्धति से अच्छे परिणाम प्राप्त होने शुरू हो गये। इस अभ्यास का पालन करते हुए तीन वर्ष की समाप्ति पर वे विगत की तुलना में अर्थात् क्रमशः 30 क्विंटल/एकड़ कपास और 10 क्विंटल/एकड़ मसूर दाल के रूप में तीन गुणा फसल उत्पादन लाभ प्राप्त करने लगे। लाइन विभाग अधिकारियों और प्रगतिशील किसानों ने बृहद पैमाने पर इस प्रक्रिया को जोखिम और प्रसार के लिए श्री राठौड़ के पास आए। श्री राठौड़ ने 8 गाँवों के 500 किसानों को शामिल करके लिजे में तीन कार्बनिक खेती क्षेत्रों को विकसित किया। सभी 150 किसान अपनी फसलें कार्बनिक ढंग से उगा रहे हैं। श्री राठौड़ ने अपनी फसलों की बिक्री और बेहतर मूल्य पाने के लिए मॉल्स से उत्पादकों को जोड़ा। श्री राठौड़ से मोबाईल नं. 09623098802, ई-मेल: yu-vrajrathod1986@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है।



श्री. युवराज राठौड़ को शेतिनिष्ठा शेतकारी पुरस्कार २०१६ से सम्मानित किया गया है

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।



कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

“कृषि उद्यमी” श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।

मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज

संपादक : डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक (कृषि विस्तार), डॉ. सरवनन राज निदेशक (कृषि विस्तार)

सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे

हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली

अधिक प्रश्नों हेतु, कृपया indianagripreneur@manage.gov.in पर संपर्क करें।